REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

पाटण की स्थापना का इतिहास

डा.हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

❊ सारांश :

पाटण की स्थापना के बारे में मेरुतुंग की प्रबंध चिंतामणी में वि.सं.८२१ के वैशाख सुद बीज ने सोमवार तथा धर्मारण्य पुराण में वि.सं.८०२ अषाढ सुद त्रीज ने शनिवार के दिन पाटण की (इ.स.७४६) स्थापना हुई हो ऐसा मानने में आया है। पाटण की स्थापना का एक लेख हाल में पाटण में गणपति की पोल में गणपति मंदिर आया है। मंदिर में उमा महेश्वरी की मूर्ति के नीचे इ.स.७०६ के रोज पाटण बसा है एसा लिखने में आया है। 'मिराते सिकंदरी' में भी पाटण अखात्रीज के दिन बसा हो ऐसा उल्लेख मिलता है। यह सब माहिती पर से एसा अनुमान करने में आया है कि वैशाख सुद बीज ने सोमवार के दिन पाटण की स्थापना हुई थी और लोग अषाढ सुद त्रीज ने शनिवार के दिन गाँव में रहने आये थे।

❊ पाटण के राजवंशो :

- चावडा वंश :

यह राजवंश के लिए चावोटक, चापोत्कट, चाउका और चावडा ऐसे विविध नाम अनुकालिन साहित्य में से मीलते है। संक्षेप में उसे 'चाप' भी कहते थे।

- चावडा वंश के राजवी :

पूरे चावडा वंश के स्थापक वनराज चावडा थे।

पाटण गुजरात का पाटनगर तथा भारत का महान सांस्कृतिक और व्यापारी केन्द्र पाटण की स्थापना हुई।

'प्रबंध चिंतामणी' में चावडा राजवंश की साल के हिसाब की वंशवाली की विस्तृत माहिती मिलती है। प्रबंध चिंतामणी के हिसाब से

(१)	वनराज चावडा	६० साल
(२)	योगराज	१७ साल
(३)	राजा रत्नादित्य	३ साल
(४)	राजा वैरसिंह	११ साल
(५)	राजा क्षेमराज	१७ साल
(६)	राजा चामुंडराज	१३ साल
(७)	राजा आंबड	२७ साल
(८)	सामंतसिंह	२७ साल

पाटण में कुल आठ राजा १९६ साल राज्य करने का उल्लेख है। दूसरे अनुश्रुति के मुताबिक सात राजवी थे। सातो सात राजाओ का कुल शासनकाल १९६ साल का था। किसी एक राजा के दो नाम होने का संभव है।

- **सोलंकी वंश :**

सामंतसिंह बहोत असक्त, वहेमी और व्यसनी राजवी था। मूलराज का बारबार अपमान करने से भान्जे मूलराजे मामा सामंतसिंह को मार कर पाटण की गादी पर सोलंकीवश की स्थापना की। सोलंकी वंश ३०२ साल तक अणहिलपुर की गादी पर राज्य किया। इ.स.९४२ से ११८८ कुल ३०२ साल सोलंकी वंश का शासन था।

- **सोलंकी शब्द का अर्थ :**

गुजराती में जिसको 'सोलंकी' कहते है उसको संस्कृत में 'चौलुक्य' कहते। मूलराज के वंश के अभिलेखो में शुरु में 'शौल्किय' (चाल्किक) या 'चौलिकक' और आगे चलकर हंमेशा 'चालुक्य' रुप प्रयोजाता। इस काल के साहित्य में कभी 'चलुक' प्राकृत में 'चुलुग' या 'चुलुकक' और कवचित 'चालुकक' रुप का ही होता। वाघेला वंश के अभिलेखो में तथा उस समय के साहित्य में मुख्यतः 'चौलुक्य' रुप का ही उपयोग किया है। गुजरात में 'चुलुक्य', 'चौलुककय' और उससे मिलकर रुप ज्यादा प्रचलित था लेकिन नवमी सदी में चुलिको-शुलिको का एक दूसरा कुल प्रतिहार राज्य के पाटनगर कनोज में आकर बसा था। १०मी सदी में इस कुल के मूलराज ने अणहिलवाड में सत्ता प्राप्त की तब यहाँ वह शुरु में 'चौल्किक', 'शौलिकक' तरह वह आगे चलकर 'चुलुकय' ने 'चौलुकय' या सोलंकी के नाम से पहचाने गये।

❊ सोलंकी राजा :

(१) मूलराज पहेला (इ.स.९४२ से ९९७) :

प्राचीन ग्रंथो में अभिलेखो में सोलंकी राजवंश का जो वृत्तांत दिया है वह सामान्यतः मूलराज पहला से शुरु हुआ है। मूलराज पहला चौलक्य वंश का आद्यस्थापक माना जाता है। उसके पिता का नाम राजि (राज) था और वह राजाधिराज के नाम से पहचाना था एसा मूलराज के इ.स.९८७ के दानपत्र पर से जाना जाता है। 'प्रबंध चिंतामणी' में उसकी माता का नाम लीलादेवी बताया है। उसने अणहिल पाटण के चावडा राजवी को हराकर पाटण को गादी मिली थी। इस चावडा वंश का आखरी राजवी सामंतसिंह होने का माना जाता है। इ.स.९८७ के दानपत्र में मूलराज को महाराजाधिराज कहा है। उसने स्वपराक्रम से पाटण की सत्ता अपने पास ली थी।

मूलराज पहला अणहिलवाड पाटण के आसपास आया हुआ सारस्वतमंडल पर और जोधपुर सांचोर के आसपास आया हुआ सत्यपुरमंडल पर राज्य किया था वह निर्विवाद है।

(२) चामुंडा राज (इ.स.९९७ से इ.स.१०१०) :

सोलंकी राजवी मूलराज के पुत्र ने इ.स.९९७ से इ.स.१०१० साल तक राज किया। वह चाहमान राजाभोज की कुंवरी का पुत्र होने की वजह से दोनो पक्ष राजकुल के थे। हेमचंद्राचार्य 'द्वयाश्रय' में दिखाते है कि, चामुंडराजे लाट के बारप्प को हराने के लिए मूलराज को अच्छी मदद की थी। इसीलिए यह कहा जाता है कि मूलराज के समय में वह महत्व का स्थान प्राप्त कर लिया होगा।

(३) वल्लभराज (इ.स.१०१०) :

वल्लभराज चामुंडराज का सब से बडा (जयेष्ठ) पुत्र था। वाचिनीदेवीने चामंडराज को पदभ्रष्ट करके गादी पे बिठाया था। वह बहोत कम समय सत्ता पर रहा ऐसा 'द्वयाश्रय' पर से जान सकते है। इ.स.११५२ की 'वडनगर प्रशस्ति' में चौलुक्य वंशावली में वल्लभराज का उल्लेख मिलता है। उसके बाद कुछ चौलुक्य अभिलेखो में वल्लभराज और दुर्लभराज के राजवी के नाम से उल्लेख दखने को मिलता है। 'प्रबंधचिंतामणी' में बताने के मुताबिक, वल्लभराज ने छ माह जितना शासन किया था।

(४) दुर्लभराज (इ.स.१०१० से इ.स.१०२२) :

वल्लभराज का अवसान होने से उसके छोटे पुत्र दुर्लभराज इ.स.१०१० में पाटण की गादी पर आया। इस समय कालवा के सिंधुराज को जगा पर उसके पुत्र भोज गादी पर आये थे और लाट में बारप्प के पुत्र गोग्गिराज ने अपनी सत्ता वापस ली थी और दुलर्भराजने लाट के राजा का हराया था।

(५) भीमदेव पहला (इ.स.१०२२ से इ.स.१०६४) :

नागराज सोलंकी का पुत्र भीमदेव पहला (इ.स.१०२२) में पाटण की गादी पर आया। उसके बाद उसके समय में महमद गझनवी ने सोमनाथ पर चडाइ की और पाटण और उसके आसपास के विस्तार को लूंटकर उसके उपर आक्रमण किया। यह आक्रमण के बारे में समकालीन हिंद और जैन लेख की कृतिओमें से भी कुछ उल्लेख मिले है। उपरांत मुस्लिम लेखको की नोंध द्वारा जानने को मिलता है।

भीमदेव पहला पराक्रमी राजा था। उसने अनेक विजय प्राप्त किये थे। आबु पर विमलवसहि नामक सुंदर जैन मंदिर बनवाया है जो आज भी आंतरराष्ट्रीय कीर्ति कहलाता है। उसने सोमनाथ के मंदिर का जीर्णोध्धार करके नया पथ्थर का मंदिर बनवाया। मोढेरा में उसके समय दरम्यान पथ्थर का नया सूर्यमंदिर बनवाया। राणी उदयमतिने पाटण में सहस्त्रलिंग के पास एक अदभूत नकशीकाम वाली सुंदर वाव बनवायी। इ.स.१०८६ में भारत सरकार के पुरातत्व

खाते की ओर से उसका खोदकाम और समारकाम किया है। उसमें स राणी उदयमती की सुंदर प्रतिमा मीली है। यहाँ से मीला हुआ शिल्प अवशेषो की समृद्धि पर से गुजरात की सर्वोत्तम कोतरणीवाली वाव होने का मालूम पडता है।

(६) कर्णदेव पहला (इ.स.१०६४ से इ.स.१०९४) :

प्रतापी राजवी भीमदेव पहला के मृत्यु के बाद उसके पुत्र कर्णदेव पहला इ.स.१०६४ में पाटण की गादी पे आया। बकुलादेवी के पुत्र क्षेमराज बडा होने के बावजुद कर्ण को गादी मीली उसका कारण उसकी माता वारंगना थी। उसके बाद क्षेमराज संसार का त्याग करके दधिस्थाली में सरस्वती नदी के किनारे तप करने गये और कर्णदेव पाटण का राजवी बना। कर्णदेव क्षेमराज के पुत्र देवप्रसाद को उनके पिता की देखभाल करने के लिए दधिस्थली भेजा और वह स्थल उसको सौंप दीया। 'द्वयाश्रय' पर से जान शकते है कि कर्ण का समय सामान्यतः उसके पिता भीमदेव और पुत्र जयसिंहदेव से बहोत शांतिमय था।

कर्णदेवने ३० साल जितना राज किया। उसने लाट प्रदेश जीतकर अपने राज्य का विस्तार नवसारी तक बढाया था। आज भी लोकजीवन में सिध्धराज जयसिंह 'सधरा जेसंग' के नाम से जीवीत है। मेरुतुंग के बताने के मुताबिक सिध्धराज सही उंमरपे गादी पर बेठा होने का जानने को मिलता है और इ.स.१०९४ में सिध्धराज का राज्याभिषेक हुआ था। 'विचारश्रेणी' में भी सिध्धराज के राज्याभिषेक की तारीख इ.स.१०९४ की दी है। इसीलिए जानने को मिलता है कि इ.स.१०९४ में ही सिध्धराज गादी पर आया होगा।

जुनागढ का विजय, नडुल के आशाराज सिध्धराज का सामंतपद स्वीकार, शाकभरी के राजा विगृहराज तीसरा को पौत्र अर्णोराज सिध्धराज के सामने नमी आधिपत्य स्वीकार किया, मालव विजय सिध्धराज का महान पराक्रम गीना जाता है। मालवा के यशोवर्मा को हार दी। सिन्धुराज पर विजय, सिध्धराज ने भिन्नमाल के परमारी को हराकर पाटण के सामंत की तरह रखा। चंदेलवंश के मदनवर्मा के साथ संधि की, 'बर्बरकजिष्णु' पर विजय हांसल किया।

सिध्धराज के समय में मीले हुए लेखो में उसके बारे में अलग-अलग विशेषणो का उपयोग हुआ देखने को मिलता है। सिध्धराज के प्रशस्ति लेख में उसके नाम के साथ 'परमभट्टारक', 'महाराजाधिराज', 'परमेश्वर' ऐसे सामान्य विशेषणो से प्रयोजा गया है। इ.स.११३७ के गाले में जयसिंह के नाम आगे 'समस्त राजावलीविराजित', 'सिद्धचक्रवर्ती', 'अवन्तीनाथय' विशेषण लगाने में आये है। इ.स.११३९ के उज्जयिनी के लेख में से सिध्धराज के नाग आगे 'त्रिभुवनगंड', 'सिद्धचक्रवर्ती', 'अवन्तिनाथ', 'बर्बरकजिष्ण' आदि बिरुद लगाये है। यह सब बिरुद सिध्धराज की महान राजवी प्रतिभा का ख्याल देते है।

सिध्धराज जयसिंह के महान कार्यो में से सबसे महान उसका महासर (सहस्त्रलिंग) सरोवर, सरस्वती के किनारे श्रीस्थल (सिध्धपुर) में रुद्रमहालय का जीर्णोध्धार कराया। सिध्धपुर में भगवान महावीर स्वामी का देरासर भी बनवाया। उन्होने अनेक किल्ले, कुवे, वाव, तालाब आदि बनाये थे।

साम्राज्य की सीमा का विस्तार पश्चिम के सौराष्ट्र और कच्छ तक फली थी। दक्षिण में खंभात और लाट के विस्तार भी उसकी सत्ता तले थे। राजस्थान के कुछ भाग पर उसकी सत्ता फली थी। इस पर से कह शकते है कि सिध्धराज जयसिंह के साम्राज्य में अभी के गुजरात, राजस्थान तथा मालवा के बहोत से विभागो का समावेश होता होगा।

(८) कुमारपाल (इ.स.११४४ से इ.स.११७२) :

प्रतापी राजवी सिध्धराज जयसिंह की मृत्यु होने के उसके बाद पाटण की गादी पर त्रिभुवनपाल का पुत्र कुमारपाल आया। 'प्रबंधचिंतामणी' में बताने के मुताबिक कुमारपाल पचास वर्ष की प्रौढ वय में गादी पर आये। 'विचारश्रेणी' में राजगादी प्राप्त करने की साल इ.स.११४२ की डिसेम्बर माह की अंतिम आरीख बताई है। कुमारपाल के लेख इ.स.११४४-४५ से इ.स.११७१-७२ तक के लख मिलते है। कुमारपाल के बाद गादी पर आये अजयपाल के लेख वि.सं.११२८ और ११२९ के अरसे में आया होने का मालूम पडता है।

कुमारपाल ने अपने राज्यकाल दरमियान अनेक देवालय बनाये। उसने अणहिलपुर पाटण में कुमारपाल विहार, त्रिभुवन विहार, देवपतन (प्रभास) में पार्श्वनाथ का मंदिर, कजालोर का कांचनगिरि गढ के उपर कुमारविहार नामक जैन मंदिर बनाये थे। सोमनाथ और कदारेश्वर के मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था। इसके अलावा अनेक मंदिर और देवालय भी बनवाये।

(९) अजयपाल (इ.स.११७३ से इ.स.११७६) :

कुमारपाल अपुल होने की वजह से उसकी मृत्यु के बाद उसके भाई महिपाल का पुत्र अजयपाल गादी पर आये। आचार्य मेरुतुंग के बताने के मुताबिक इ.स.११७४ के रोज वह पाटण की गादी पर आये और तीन साल जितना शासन किया था।

(१०) मूलराज दूसरा (इ.स.११७६ से इ.स.११८७) :

अजयपाल के बाद उनके पुत्र मूलराज दूसरा इ.स.११७७ में गादी पर बेठे और उन्होने २ साल जितना शासन किया। 'प्रबंधचिंतामणी' में उनका राज्यकाल इ.स.११७७ से ११७९ तक का बताया है।

(११) भीमदेव दूसरा (इ.स.११७८ से इ.स.१२४२) :

मूलराज दूसरा के बाद उसके छोटे भाई भीमदेव दूसरा पाटण की गादी पर आये। मूलराज की तरह वह भी राज्यारोहण के समय कम उमर के यानी नौजवान थे। वह इ.स.१२७८ में गादी पर आये और उन्होने ६३ साल यानी इ.स.१२४२ तक राज किया।

भीमदेव दूसरा पूरे सौराष्ट्र, लाट प्रदेश वागड, मेवाड, आबु, किराडु आदि प्रदेशो पर आधिपत्य प्राप्त कर लिया था। उस समय में सिध्धराज और कुमारपाल के वक्त में सोलंकी वंश की जो जाहोजलाली थी उसके बाद के राजवीओ के समय में कम होती गई। क्युंकि महम्मद शाहबुदीन घोरी के साथ युध्ध में बहोत नुकसान हो गया था।

(१२) त्रिभुवनपाल :

भीमदेव के बाद पाटण की गादी पर आये हुई त्रिभुवनपाल के इ.स.१२४२ का और इ.स.१२४३ का ऐसे दो लेख मिलते है। इस पर से जान शकते है कि इ.स.१२४२ में पाटण में सत्ताधीश थे। त्रिभुवनपाल सोलंकी राजवी मूलराज पहेला के वंश का आखरी राजवी था। उसके बाद धोलका के राजा विसलदेव अणहिलवाड की गादी पर बेठा जो सोलंकीओं की दूसरी शाखा थी।

इ.स.९४२ में सत्तारुठ हुए मूलराज का वंश इ.स.१२४४ तक अर्थात ३०२ साल जितने लंबे समय सत्ता पर रहे और आखिर सोलंकी वंश की दूसरा शाखा वाघेला सोलंकी वंश पाटण की सत्ता पर आये।

- वाघेला वंश :

२०० साल बाद सल्तनतसमय के इन्सान के राजवंश के एक शिलालेख में 'वाघेकला' रुप प्रयोजाया है। वीसलदेव के पूर्वज 'व्याध्रपल्ली' वाघेला गाँव के निवासी के नाम से जाने जाते होने के कारण वह वाघेला नाम से पहचाने गये।

इस वंश के राजाओ का कूल तो चौलुक्य ही था और वह इस कुल की 'व्याध्रपल्ली' (वाघेला) शाखा के थे। इसीलिए सही तौर पर उनको 'व्याध्रपल्लीय' चौलुक्यो या वाघेला सोलंकी नाम से पहचाना जाना चाहिए।

(१) विसलदेव (इ.स.१२४४) :

त्रिभुवनपाल के बाद गुजरात के 'महाराजाधिराज' का पद विसलदेव ने कब्जे किया। अणहिलवाड पाटण में अपनी सत्ता स्थापी और राजगादी प्राप्त की। इ.स.१२५१ में विसलदेव का पहला दानपत्र देखने को मिला है। प्रबंधो में उनके राजकाल का उल्लेख मिलता नहीं। इ.स.१२६१ में महामात्य 'नागड' अणहिलवाड पाटण में विसलदेव का मुद्रकार्य संभालता था। विसलदेव पाटण का राजा बना तब उसने पादवराज सिंधण को हराया था। उसके समय में देवपाल का पुत्र ज्यंतिसिंह दूसरा वहाँ राज करता था और मुस्लिम हमले के कारण मालवा की सत्ता निर्बल बनी थी। विसलदेव ने मालवा पर चडाइ कर के धारानगरी का नाश किया था। इसीलिए गणपति व्यास ने 'धाराध्वंश' नाटक लिखा है।

- वस्तुपाल-तेजपाल :

वस्तुपाल-तेजपाल का जन्म अणिहलवाड पाटण में प्राचीन पोरवाड वणिक ज्ञाति में हुआ था। वस्तुपाल खुद विद्वान, विद्याप्रेमी और विद्वानो का आदर सत्कार करते थे। वस्तुपाल और तेजपाल ने अनेक मंदिर, धर्मशाला, तालाब, कुवे तथा अन्य स्थापत्य बनाये थे। उन्होने दवाखाना, शिवालय, मठो और मस्जिदे भी बनायी होने का स्पष्ट उल्लेख 'प्रबंध कोश' में किया है।

(२) अर्जुनदेव (इ.स.१२६२-७५) :

विसलदेव के बाद इ.स.१२६२ प्रताप मल्ल का पुत्र अर्जुनदेव पाटण की गादी पर आया।

अर्जुनदेव राज्य काल की शुरुआत की या अंत तक सत्ता पे रहा था ऐसा जानने को मिलता है। इसकी सत्ता सौराष्ट्र वेरावल तक, उत्तर पश्चिम कच्छ तक और उत्तर में इडर तक फली थी।

(३) रामदेव :

अर्जुन देव का रामदेव नामक पुत्र था और छोटा सारंगदेव था। एक शिलालेख में रामदेव के लिए 'नृपचक्रवर्तीय' विशेषण का उपयोग होने कि वजह से अल्पकालीन के लिए रामदेव राजगादी पे आया होगा ऐसा मानने में आता है। कर्णदे दूसरे के समय में शिलालेख देखने के लिए 'नृपचक्रवर्ती' कहा है। यह लेख पर से अर्जुनदेव का वारसदार बडा बेटा रामदेव गादी पे आया जानने को मिलता है।

(४) सारंगदेव (इ.स.१२७५-९७) :

अर्जुनदेव के बाद उसके छोटे पुत्र सारंगदेव के राज्य का इ.स.१२७५ में आरंभ हुआ। उसने अपने अमल दरम्यान अनेक युद्ध करके गुर्जर भूमि को भयमुकत किया था। सारंगदेव के राज्य का विस्तार उत्तर में पालनपुर और आबु तक, पश्चिम में सोमनाथ-पाटण और वंथली तक और पूर्व उपरांत दक्षिण में भी उसकी राजसत्ता फली हुई थी।

(५) कर्णदेव दूसरा (इ.स.१२९७-१३९४) :

सारंगदेव के बाद उनके बडे भाई रामदेव के पुत्र कर्णदेव दूसरा गुजरात की गादी पे आया। इ.स.१२९६-९७ दरम्यान कर्णदेव दूसरा और अणहिलवाड के चौलुक्य वंश का आखरी राजा था। उसका राज्य आबु, सौराष्ट्र और कच्छ, दक्षिण में लाट तक फला था।

कर्णदेव खुद आशावल में से भाग कर दक्षिण में देवगीरी के यादव राज्य रामचंद्र की आश्रय में गया, वहाँ खानदेश में नंदुरबार जिल्ला के बागलाण के जिल्ले का सामंत के तौर पर रहकर एक छोटी सत्ता जमाकर उसके साथे उसकी देवल देवी थी। कर्णदेव बागलण के किल्ले में आश्रय लेकर रहता था तब राजा रामचंद्र के युवराज सिंधणदेव ने देवलदेवी के साथ विवाह करने की मांग की। जिसका कर्णदेव के अनादर किया। इ.स.१३३७ में रचाया हुआ नामिनंद प्रबंध में बताया है कि अलाउद्दीन के प्रताप से कर्णदेव राजा हारकर परदेश में गया और वहाँ भटक-भटक कर रांक इन्सान की तरह मौत हुई। वाघेला राजवी कर्ण दूसरे के समय में उसका पूरी तरह से नाश हुआ और गुजरात में दिल्ही के मुसलमान सुबाओ का शासन अस्तित्व में आया।

❊ संदर्भसूचि :

१. आचार्य नवीनचंद्र आ., ''गुजरात चावडा राज्य का इतिहास'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, १९७३, पृ.१-२
२. आचार्य गिरिजाशंकर, ''गुजरात के ऐतिहासिक लेख'', भाग-३, मुंबई, १९७३, पृ.१-२
३. स्वामी मनसुख, ''पाटण दर्शन'', आशा प्रकाशन, मु.विरनगर, जि.राजकोट, १९८५, पृ.७
४. आचार्य गिरिजाशंकर, पूर्वोक्त, पृ.४०
५. धारैया आर. के., ''गुजरात का इतिहास'', सी.जमनादास की कंपनी, अहमदाबाद, २००४, पृ.१०७
६. ब्रह्मक्षत्रिय मुकुन्दपाइ पी., ''अणहिलपुर की अस्मिता और पाटण का सांस्कृतिक इतिहास'', पाटण टाइम्स-पाटण, १९९६, पृ.६०

डा.हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

LBP PUBLICATION